पुष्करराज भट्ट

नेपाली लघुकथा : परम्परा, वर्तमान दशा एवं दिशा

नेपाली भाषा में आधुनिक लघुकथा लेखन सात दशक से पहले से आरम्भ हुआ । वि. सं. २००७ (ईस्वी सन् 1950) में पूर्णप्रसाद ब्राह्मण की 'झिल्का' लघुकथा कृति को नेपाली भाषा की प्रथम लघुकथा कृति माना गया है । नेपाली लघुकथा साहित्य की पृष्ठभूमि में प्राचीन धार्मिक एवम् पौराणिक साहित्य का सन्दर्भ आता है । धार्मिक एवं पौराणिक आख्यानों का अनुवाद, पञ्चतन्त्र एवं हितोपदेश से सम्बन्धित अनुवाद, ईसप की नीतिकथाओं के साथ-साथ अनेक आख्यानों का अनुवाद भी इसके लेखन की पृष्ठभूमि है । इस कालखण्ड की रचनाओं में संस्कृत एवं नीतिकथा की अनुवाद-परम्परा का प्रभाव तथा तिलस्मी रूप की छोटी कहानियों का अनुवाद पाया जाता है । इस प्रकार के आख्यान में लोककथात्मक शैली का प्रयोग मिलता है । अति काल्पनिक कथानक एवं मुहावरों को विषय बनाकर लघुकथा लिखना भी इस कालखण्ड की विशेषता है । इस कालखण्ड की लघुकथाओं में आंशिक रुप में ही सामाजिकता का प्रयोग किया गया है ।

नेपाली लघुकथा का प्रारम्भकाल वि. सं. २००७ से लेकर २०२९ (ईस्वी सन् 1950 से 1972) तक है । इस कालखण्ड में लघुकथा के संरचना एवं शिल्प में आधारित होकर लघुकथा लेखन का प्रारम्भ हुआ । लघुकथा में कृतियां, पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी ।. नेपाल में सात साल के परिवर्तन के साथ उस समय के परिवर्तन एवं जीवन मूल्य लघुकथा रचनाओं में प्रतिबिम्बित हुई । लघुकथा रचना में तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का प्रभाव दिखने लगा । राणा शासन काल एवं प्रजातन्त्र काल की विकृतियों का चित्रण होने लगा । वि.सं. २०१७ (ईस्वी सन् 1960) में प्रजातन्त्र के अपहरण के बाद की परिस्थितियाँ विकृत हो गयीं। अन्याय–अत्याचार, नागरिक समस्याएँ, महिला उत्पीड़न का उद्घाटन, पारिवारिक जीवन की समस्या, धार्मिक आडम्बर, अशिक्षा, गरीबी व बेरोजगारी का चित्रण किया गया । इस कालखण्ड की लघुकथाओं में जीवन की विसंगतियों के साथ-साथ निराशा, कुण्ठा एवं हताशा का चित्रण, राजनीतिक पाबन्दियाँ, एकतन्त्रीय शासन से उत्पन्न निराशा, कुण्ठा एवं हताश मनस्थिति का चित्रण पाया गया। इस कालखण्ड की लघुकथाओं में अस्तित्ववादी चेतना और स्वच्छन्दतावादी लेखन का भी आरम्भ हुआ ।

विं. स. २०३०–२०४५ (ईस्वी सन् 1973 से 1988) नेपाली लघुकथा का विकास काल है । इस कालखण्ड में अभाव, अशिक्षा एवम् गरीबी से उत्पन्न विसंगत जीवन की अभिव्यक्ति, जीवन की निस्सारता, खोखलापन, निराशा, कुण्ठा एवं सामाजिक भ्रष्ट क्रियाकलाप लघुकथा लेखन के विषय बने। इस कालखण्ड की लघुकथाओं में

आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र के विसंगतिओं के विरुद्ध व्यंग्य एवम् विद्रोह, निरंकुश पंचायती व्यवस्था का विरोध एवम् प्रजातन्त्र की अभिलाषा, पशु-पक्षी पात्रों का प्रयोग, मिथक का प्रयोग, प्रतीकात्मक एवं अन्योक्तिमूलक लघुकथा लेखन का आरम्भ, कलात्मक कौशल के प्रति सचेतनता पायी गयी । इस कालखण्ड में लघुकथा लेखन की विविध शैलियों का प्रारम्भ एवं विषयवस्तुगत विविधता पायी गयी । चालीस के (अर्थात् बीसवीं सदी के नौवें) दशक में लघुकथा सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन तीव्र हुआ । लघुकथा लेखन प्रयोग के स्तर में विकास हुआ। नेपाली लघुकथा का समसामयिक (यानी आधुनिक) काल वि. सं. २०४६ (ईस्वी सन् 1989) से प्रारम्भ होता है । इस कालखण्ड में लघुकथा प्रयोग के स्तर से उठकर विधा लेखन के स्तर पर विकसित हुई । इस अवधि के लेखन में प्रजातन्त्रोत्तरकाल की विकृतियों का चित्रण, वि. सं. २०४६ (ईस्वी सन् 1989) के राजनीतिक परिवर्तन जनता की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे; जिस कारण जनता में असन्तुष्टि, गणतन्त्र काल की समस्याएँ, सामाजिक जीवन की अनेक विकृतियों के व्यंग्य एवं विद्रोह की चेतना, प्रतीकात्मक लेखन में वृद्धि, राजनीतिक मूल्यहीनता, बढ़ती भ्रष्टता एवं अपराधीकरण के प्रति चिन्ता, सामाजिक वर्गद्वन्द्व, उत्पीड़न विरोधी चेतना एवं विद्रोह का स्वर, द्वन्द्वकालीन नेपाली समाज तथा सामान्य जनता में उत्पन्न भयत्रास एवम् सन्त्रास की अभिव्यक्ति, हिंसाजन्य परिवेश, शान्ति की कामना, आर्थिक विसंगति, साहित्यिक विकृति का चित्रण किया गया । इस कालखण्ड की लघुकथाओं में मानवीय स्वार्थ, चापलूसीजन्य क्रियाकलाप, वैयक्तिक जीवन की प्रेम, यौन एवं गार्हस्थ जीवन की घटनाओं की प्रस्तुति, अभियान्त्रिक चेतना, प्रवासी नेपालियों की पीड़ा, चित्रात्मकता, नवीन बिम्ब एवं प्रतीक का प्रयोग हुआ एवं उसमें वृद्धि हुई ।

समकालीन नेपाली लघुकथा में पचास का दशक (अर्थात् बीसवीं सदी का अन्तिम दशक) बहुत महत्वपूर्ण है । इस कालखण्ड में प्रतिबद्ध लघुकथा लेखन का प्रारम्भ हुआ । लघुकथा के सैद्धान्तिक आधार की खोज प्रारम्भ हुई । लेखन एवं आलोचना की पुस्तक प्रकाशन ने तीव्रता पकड़ी । लघुकथा में विचार-विमर्श आरम्भ हुआ । साठ के दशक (अर्थात् इक्कीसवीं सदी के पहले दशक) में नेपाली लघुकथा का विस्तार बढ़ने लगा । इस कालखण्ड में लघुकथा सम्बन्धी अनेक संस्थाओं का, लघुकथा समाज का गठन हुआ । लघुकथा सम्बन्धी पत्रिका प्रकाशन ने गति पकड़ी। लघुकथा के स्वतन्त्र विशेषांक निकलने लगे । लघुकथा सम्बन्धी प्राज्ञिक अर्थात् उच्च-स्तरीय अध्ययन का आरम्भ हुआ । अनेक लघुकथा लेखकों की रचनाओं पर स्नातकोत्तर स्तर में शोध कार्य होने लगे। इसी दशक के अन्त में लघुकथा में दर्शनाचार्य (एमफिल) शोध सम्पन्न हुआ ।

सत्तर के (अर्थात् इक्कीसवीं सदी के दूसरे) दशक में लघुकथा में पहला विद्यावारिधि (पीएचडी) सम्पन्न हुआ। सत्तर के दशक के बाद नेपाली लघुकथा ने विश्वविद्यालय स्तर पर मान्यता प्राप्त की । लघुकथा पेज के माध्यम से अनेक रचनाकारों को लघुकथा के प्रति जागरुकता प्रदान की गयी। लघुकथा का वाचन, अभिनय एवं प्रतियोगिताओं के

आयोजन होने लगे । लघुकथा सम्बन्धी अनुवाद कार्य का आरम्भ हुआ । लघुकथा में आलोचना की पुस्तकें प्रकाशित हुईं। नेपाली लघुकथा ने नेपाल से बाहर पूर्वोत्तर भारत एवं विश्व के अनेक देशों में अपने पैर फैला लिये । प्रविधि के माध्यम से अनेक देशों के लघुकथा लेखकों के बीच रचना वाचन एवं समीक्षा कार्य होने लगे । दशक के अन्त में नेपाली लघुकथा में दूसरा विद्यावारिधि सम्पन्न हुआ । लघुकथा में वाद-विवाद के कार्यक्रम होने लगे । लघुकथा में ब्लॉग का संचालन आरम्भ हुआ ।

वर्तमान में नेपाली लघुकथा में अनगिनत रचनाकार आए हैं । उनमें बहुत-से लोग लघुकथा के विकास के प्रति सजग हैं ; लेकिन कुछ लोग जल्दी प्रसिद्धि के लोभ में सर्जना से ज्यादा प्रचार कार्य में रुचि ले रहे हैं । उनका मकसद लघुकथा को समृद्ध बनाना नहीँ, अपना नाम चमकाना हो गया है । लघुकथा के नाम पर विकृति लाने वाले लघुकथा के गुणस्तर के प्रति सजग नहीँ हैं , वे लघुकथा के नाम पर अपने आप को दिखाने में रुचि दिखा रहे है । नेपाली लघुकथा में अब लेखकों की कमी नहीँ है, लघुकथा के प्रति प्रतिबद्ध, स्तरीय लेखकों की कमी है । नेपाली लघुकथा का स्तर बढ़ाने के लिए इसके ऊपर अध्ययन, अनुसन्धान बढ़ाना आवश्यक है । स्तरीय लघुकथा का लेखन, स्तरीय लेखन का आरम्भ, प्रविधिमैत्री लेखन आवश्यक है । अब जन-उत्तरदायी लेखन होना आवश्यक है । वर्तमान में नेपाली लघुकथा में समसामयिक नेपाली जनता की सरोकार की आवाज मुखरित होना आवश्यक है । इसके अलावा सार्क स्तर में जनता की समस्या के साथ-साथ विश्व स्तर में मानव जाति के पीड़ा, मानव मुक्ति का आकांक्षा मुखरित होना जरुरी है। परम्परागत शिल्प से मुक्त होकर नवीन शिल्प का प्रयोग, विषयवस्तु में नवीनता, अनुवाद के माध्यम से लघुकथा का विस्तार, आलोचना साहित्य के माध्यम से स्तरीयता की खोज अब की कार्यदिशा होना आवश्यक है । परम्परागत सही आदर्शों का पालन, मानवतावादी नवीन मूल्यों की खोज, वंचित लोगों की समस्याओं का उजागर, पर्यावरणीय समस्या का समाधान, साम्राज्यवादी सोच का विरोध, युद्ध के माध्यम से होने वाले नरसंहार का विरोध, पशु अधिकार, अल्पसंख्यक एवं लैंगिक मानवों की अधिकार प्राप्ति, सामाजिक न्याय आदि विषयों पर कलम चलने लगे तो नेपाली लघुकथा की दिशा सही हिसाब से आगे बढ़ती रह सकती है । हम सब को अपनी चेतना को समृद्ध बनाने की महती आवश्यकता है ।